INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HINDI MEDIUM

राजस्थान BSTC (Pre. D.El. ED)

HANDWRITTEN NOTES

भाग-3 संस्कृत

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान
BSTC
(Pre.D.El.ED)

भाग – 3

संस्कृत

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"राजस्थान BSTC (Pre. D.El.Ed.)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को **"प्रारंभिक शिक्षा विभाग -बीकानेर"** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान BSTC (Pre. D.El.Ed.)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/l6dgy4

Online Order करें - https://bit.ly/bstc-notes

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	संज्ञा प्रकरण, स्वर, व्यंजन एवं उच्चारण स्थान	1
2.	प्रत्यय	17
3.	संधिः	23
4.	समास	38
5.	शब्द-रूप	49
6.	धातु-रूप	60
7.	अव्यय	68
8.	उपसर्ग	75
9.	कारक	81
10.	अशुद्धि संशोधनम्	90

अध्याय – I

संज्ञा प्रकरण, स्वर, व्यंजन एवं उच्चारण स्थान

व्यावहारिक सुविधा के लिए प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ को किसी न किसी नाम से अभिहित किया जाता है। इसी नाम को संज्ञा भी कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में संज्ञाओं एवं परिभाषाओं का बहुत महत्त्व होता है। इनका प्रयोग लाघव के लिए किया गया है। संज्ञाओं एवं परिभाषाओं को समझने से व्याकरण-प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलती है।

अर्थ का कुछ नाम होता है। नाम कोई पद होता है। जैसे दशरथ का पुत्र, सीता का पति, यह अर्थ है, उस का नाम राम है। इसलिए राम नाम पद होता है। उसका अर्थ होता है - दशरथ का पुत्र और सीता का पति। इसलिए राम एक पद है। दशरथ का पुत्र यह अर्थ है। इसी को पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार के वाचक पद को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा का अर्थ संज्ञी कहते हैं। जैसे राम पद संज्ञा है । दशरथ पुत्र संज्ञी है।

कुछ संज्ञाएँ एवं परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं—

आगम

किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्रवत् पास आकर बैठकर उससे
संयुक्त हो जाता है, तब वह आगम कहलाता है(मित्रवदागमः), जैसे— वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। यहाँ वृक्ष के 'अ' एवं छाया के 'छ' के मध्य में 'च्' का आगम हुआ है।

आदेश

किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है(शत्रुवदादेशः),जैसे— यदि + अपि = यद्यपि, यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश हुआ है। यह आदेश पूर्व वर्ण के स्थान पर अथवा पर वर्ण के स्थान पर हो सकता है। पूर्व तथा पर दोनों वर्णों के स्थान पर दीर्घादि रूप में 'एकादेश' भी होता है।

उपधा

किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व (वर्ण) को उपधा कहते हैं, जैसे— चिन्त् में 'त्' अंतिम वर्ण है और उससे पूर्व 'न्' उपधा है (अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा)। जैसे महत् में अन्तिम वर्ण 'त्' से पूर्ववर्ती 'ह' में विद्यमान 'अ' उपधा संज्ञक है।

पद

संज्ञा के साथ सु, औ, जस् आदि नाम पदों में आने वाले 21 प्रत्यय एवं तिप्, तस्, झि आदि क्रियापदों में आने वाले 18 प्रत्यय विभक्ति संज्ञक हैं। सु, औ, जस् (अः) आदि तथा धातुओं के साथ ति, तस् (तः) अन्ति आदि विभक्तियों के जुड़ने से सुबन्त और तिङन्त शब्दों की पद संज्ञा होती है (सुप्तिङन्तं पदम्), यथा— रामः, रामौ, रामाः तथा भवति, भवतः, भवन्ति। केवल पठ्, नम्, वद् तथा राम इत्यादि को पद नहीं कह सकते। संस्कृत भाषा में जिसकी पद संज्ञा नहीं होती उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है (अपदं न प्रयुञ्जीत)।

निष्ठा

क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं— 'क्तक्तवतू निष्ठा'। इनके योग से भूतकालिक क्रियापदों का निर्माण किया जाता है, जैसे— गतः, गतवान् आदि।

विकरण

धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में आने वाले शप् (अ) श्यन् (य) श्नु (नु), आदि प्रत्यय विकरण कहलाते हैं, यथा— भवति में भू + ति के मध्य में 'शप्' हुआ है (भू + अ + ति)। विकरण भेद

से ही धातुएँ 10 विभिन्न गणों में विभक्त होती हैं।

संयोगः- संस्कृत में 'संयोग' एक महत्त्वपूर्ण संज्ञा के रूप में प्राप्त होता है। यह एक पारिभाषिक शब्द है। महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में इसका अर्थ "हलोऽनन्तराः संयोगः" किया है। अर्थात् स्वर रहित व्यञ्जनों (हल्) के व्यवधान रहित सामीप्य भाव को संयोग कहते हैं, यथा— महत्त्व में त्, त् तथा व् का संयोग है। इसी प्रकार—

रामः उद्यानं गच्छति। उद्यानम् में 'द्' और 'य्' तथा गच्छति में 'च्' और 'छ्' का संयोग है।

अयं रामस्य ग्रन्थः अस्ति। रामस्य में 'स्' और 'य्', ग्रन्थः में 'ग्' + 'र्' तथा 'न्' और 'थ्' तथा अस्ति में 'स्' और 'त्' का संयोग है।

- **संहिता**

वर्णों के अत्यन्त सामीप्य अर्थात् व्यवधान रहित सामीप्य को संहिता कहते हैं (परः सन्निकर्षः संहिता)। वर्णों की संहिता की स्थिति में ही सन्धिकार्य होते हैं, जैसे— वाक् + ईशः में 'क्' + 'ई' में संहिता (अत्यन्त समीपता) के कारण सन्धि कार्य करने से 'वागीशः' पद बना है।

सम्प्रसारण

यण् (य्, व्, र्, ल्) के स्थान पर इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के प्रयोग को सम्प्रसारण कहते हैं (इग्यणः सम्प्रसारणम्)। जैसे— यज्- इज् → इज्यते, वच्- उच् → उच्यते

इत्यादि।

संज्ञा के प्रकार

संज्ञा कभी लघु (कम अक्षर वाली) होती है, कभी बहुत (अधिक अक्षर वाली) होती है। जैसे वृद्धि, गुण, संहिता, प्रत्यय, प्रातिपदिक, धातु, पद, कारक, समास इत्यादि । कभी लोक व्यवहार में प्रयुक्त पद संज्ञा रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे- टि, घु, घ; भम् इत्यादि।

कभी हम संज्ञा का निर्माण कर सकते हैं। तब उस संज्ञा को कृत्रिम संज्ञा कहते हैं। जैसे-अच् हल् अल् सुप् सुट् इत्यादि । कभी पाणिनि मुनि ने स्वयं संज्ञा को कहा। उसको अकृत्रिम संज्ञा कहते हैं। जैसे-वृद्धि, गुण, संहिता, प्रत्यय, प्रातिपदिक आदि।

संज्ञा अर्थ का बोधन कराती है और वह अर्थ व्यवहारिक पदार्थ होता है। यही अर्थ संज्ञा का है। इसलिए उसको अर्थ संज्ञा कहते हैं। जैसे- कर्ता, कर्म, करण आदि ।

कभी जो संज्ञा का अर्थ होता है वह अलग होता है, वर्ण भी होता है। यहां संज्ञा शब्द है। अर्थ भी शब्द है। वह संज्ञा शब्द की है। इसलिए शब्द संज्ञा कहते हैं। जैसे वृद्धि संज्ञा है। जिस अर्थ में

है। पव र्गप फ ब भ म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

प्रत्येक वर्ग में प्रथम व्यञ्जन अल्पप्राण, द्वितीय महाप्राण, तृतीय अल्पप्राण, चतुर्थ महाप्राण, पञ्चम अल्पप्राण होता है।

पांचों वर्गों में अन्तिम वर्ण अनुनासिक है। जैसे- ङ ञ ण न म।

प्रत्येक वर्ग में पहले 2 व्यञ्जन कठोर उच्चारित होते हैं। अन्तिम 3 व्यञ्जन मृदु उच्चारित होते हैं। क ख ये कठोर हैं। ग घ ङ ये मृदू हैं। इसी प्रकार सभी वर्गों में है।

प्रत्याहार

माहेश्वर सूत्रों के आधार पर विभिन्न प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे— अच्, इक्, यण्, अल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता है, किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं—

यथा— अच् = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ — यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण 'अ' का परिगणन किया गया है तथा अन्तिम वर्ण 'च्' को छोड़ दिया गया है।

(क) हल् (पाँचवें सूत्र के प्रथम वर्ण 'ह्' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष् तथा स्।

(ख) इक् (प्रथम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'इ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) इ, उ, ऋ तथा लृ।

(ग) अक् (प्रथम सूत्र के प्रथम वर्ण 'अ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) अ, इ, उ, ऋ तथा लृ।

(घ) झल् (अष्टम सूत्र के प्रथम वर्ण 'झ' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स् तथा ह्।

(ङ) यण् (पञ्चम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'य' से लेकर षष्ठ सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ण्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) य्, व्, र् तथा ल्।

सन्धि आदि के नियमों को समझने के लिए प्रत्याहार ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं— स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर (अच्)— जो (वर्ण) किसी अन्य (वर्ण) की सहायता के बिना ही बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं ।

स्वर के तीन भेद होते हैं— ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत

I. ह्रस्व स्वर— जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उसको ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में पाँच हैं— अ, इ, उ, ऋ तथा लृ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

2. दीर्घ स्वर— जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगे उसे दीर्घ स्वर कहते हैं । इनकी संख्या आठ है— आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ तथा औ। इनमें से 'लृ' ध्वनि का दीर्घ रूप 'ॡ' केवल वेदों में प्राप्त होता है। अन्तिम चार वर्णों को संयुक्त वर्ण (स्वर) भी कहते हैं, क्योंकि ए, ऐ, ओ तथा औ दो स्वरों के मेल से बने हैं।

उदाहरण —

अ+इ=ए अ+ए=ऐ अ+उ=ओ अ+ओ=औ

3. प्लुत स्वर– जिस स्वर के उच्चारण में तीन या उससे अधिक मात्राओं का समय लगे उसे प्लुत कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को दूर से पुकारते हैं तब सम्बोधन पद के अन्तिम वर्ण को तीन मात्रा का समय लगाकर बोलते हैं, उसे ही प्लुत स्वर कहते हैं। लिपि में प्लुत स्वर को '३' की संख्या से दिखाया जाता हैं, उदाहरण के लिए एहि कृष्ण३ अत्र गौश्चरति। 'ओ३म्' के ओकार का उच्चारण सर्वत्र प्लुत ही होता है।

सभी ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत स्वर वर्ण अनुनासिक एवं निरनुनासिक भेद से द्विविध हैं।

अनुनासिक– जिस स्वर के उच्चारण में मुख के साथ नासिका की भी सहायता ली जाती है, उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं।

यथा– अँ, एँ इत्यादि समस्त स्वर वर्ण।

निरनुनासिक– जो स्वर केवल मुख से उच्चारित होता है, वह निरनुनासिक है।

व्यञ्जन (हल्)

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, उन्हें व्यञ्जन या हल् कहते हैं। स्वर रहित व्यञ्जन को लिखने के लिए वर्ण के नीचे हल् चिह्न (्‌) लगाते हैं। सम्पूर्ण व्यञ्जन निम्न तालिका में दर्शाए गए हैं–

उदाहरण –

कु = क् ख् ग् घ् ङ् - क वर्ग

चु = च् छ् ज् झ् ञ्- च वर्ग

टु = ट् ठ् ड् ढ ण् - ट वर्ग

तु = त् थ् द् ध् न् - त वर्ग

पु = प् फ् ब् भ् म् - प वर्ग

व्याकरण सम्प्रदाय में इन पाँच वर्गों को कु, चु, टु, तु, पु नाम से जाना जाता है।

य् र् ल् व् (अन्तःस्थ)

श् ष् स् ह् (ऊष्म)

1. **स्पर्श**– उपर्युक्त 'क्' से 'म्' तक के 25 वर्णों को स्पर्श कहते हैं। इनके उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है। प्रत्येक वर्ग के अन्तिम वर्ण– ङ्, ञ्, ण्, न् और म् को अनुनासिक भी कहा जाता है, क्योंकि इनका उच्चारण मुख के साथ नासिका से भी होता है।

2. **अन्तःस्थ–** य्, र्, ल् और व् वर्णों को अन्तःस्थ कहते हैं। इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।

3. **ऊष्म**– श्, ष्, स्, ह् वर्णों को ऊष्म कहते हैं।

अनुस्वारः- इसका उच्चारण नासिका मात्र से होता है। यह सर्वथा स्वर के बाद ही आता है। यथा– अहम् - अहं। सामान्यतया 'म्' व्यञ्जन वर्ण से पहले अनुस्वार (ं) में परिवर्तित होता है।

1. **विसर्ग** (ः)– इसका उच्चारण किञ्चित् 'ह्' के सदृश किया जाता है; इसका भी प्रयोग स्वर के बाद ही होता है।

यथा– रामः, देवः, गुरुः।

2. **संयुक्त व्यञ्जन**– दो व्यञ्जनों के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

उदाहरण–

i) क् + ष् = क्ष्

ii) त् + र् = त्र्

iii) ज् + ञ् = ज्ञ्

- **उच्चारण स्थान**

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ एवं नासिका को उच्चारण स्थान कहते हैं। वर्णों का उच्चारण करने के लिए फेफड़े से निकली निःश्वास वायु इन स्थानों का स्पर्श करती है। कुछ वर्णों का उच्चारण एक साथ दो स्थानों से भी होता है। वर्णों के उच्चारण स्थानों को अग्रिम तालिका से समझा जा सकता है—

उच्चारण स्थान

उच्चारित वर्ण सूत्र	उच्चारण स्थान	उच्चारित वर्ण
अकुहविर्सर्जनीयानां कण्ठः	कण्ठ	अ, आ, कवर्ग, ह, विसर्ग
इचुयशानां तालुः	तालु	इ, ई, य, चवर्ग, श्
ऋतुरषानां मूर्द्धा	मूर्द्धा	ऋ, ट वर्ग, र, ष्
लृतुलसानां दन्ताः	दन्त	लृ, तवर्ग, ल, स्
उपूपध्मानीयानां ओष्ठौ	ओष्ठ	उ, ऊ, पवर्ग, उपध्मानी
ञमङ्णनानां नासिका	नसिका	ञ्, म्, ङ्, ण्, (अनुनासिक वर्ण)
एदैतोः कण्ठतालु	कण्ठ - तालु	ए, ऐ
ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	कण्ठ - ओष्ठ	ओ, औ
वकारस्य दंतोष्ठम्	दंत - ओष्ठ	वः
जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्	जिह्वामूलम्	ᳵक, ᳵख

अयोगवाह :- 4 होते हैं।

(1) अनुस्वार
(2) विसर्ग
→ अं, अः

(3) जिह्वामूलीय ᳵ क ᳵ ख = विसर्ग के समान लिखते हैं।

(4) उपध्मानीय ᳶप, ᳶफ = आधे विसर्ग में लिखते हैं।

- **वर्णों का प्रयत्न** :- वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को कहते हैं। (2 प्रका के होते हैं।)

(A) आभ्यन्तर प्रयत्न :- जिन वर्णों का उच्चारण भीतरी प्रयत्न से हो
→ 5 प्रकार के होते हैं।

(1) स्पृष्ट - स्पर्श व्यंजन (क, म तक के वर्ण)

अध्याय – 2

प्रत्यय

प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः।
प्रत्यय - परश्च (बाद में)
प्रत्ययों का प्रयोग शब्द व धातु के बाद में किया जाता है।

प्रत्यय मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं -

1. कृत प्रत्यय (धातुओं से) पठ् + ण्वुलः - पाठकः
2. तद्धित प्रत्यय (शब्दों से) ज्ञान + मतुप् - ज्ञानवान
3. स्त्री प्रत्यय (शब्द + धातु से) कुमार + ङीप् - कुमारी

तद्धित प्रत्यय (शब्दों से)

शेष –
- तरप्
- तमप्
- (तर)
- (तम)

पहचानः- (तरः/तरा/तरम्) (तमः/तमा/तमम्)

पंचमी

जहां दो व्यक्ति/वस्तुओं के मध्य किसी एक को श्रेष्ठ बताया जाएगा, तो उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

उदा. - रामः .... पटुतरः।

रिक्त स्थानं पूर्ति कुरु -

षष्ठी + सप्तमी

जहां अनेकों में से किसी एक को श्रेष्ठ बताया जाएगा, तो वहां षष्ठि और सप्तमी विभक्ति होती है।

उदा. - कवीनां .... कालीदासः श्रेष्ठतमः।

रिक्तस्थानं पूर्ति कुरु -

(1) मोहनः
(2) मोहनात्
(3) मोहने
(4) मोहनस्य

(1) कविषु
(2) कविम्
(3) कवीन्
(4) कविः

तरप्				
पटु	-	पटुतरः	पटुतरा	पटूतरम्
समीप	-	समीपतरः	समीपतरा	समीपतरम्
लघु	-	लघुतरः	लघुतरा	लधुतरम्
गुरु	-	गुरुतरः	गुरुतरा	गुरुतरम्
कटु	-	कटूतरः	कटुतरा	कटुतरम्
दीर्घ	-	दीर्घतरः	दीर्घतरा	दीर्घतरम्
श्रेष्ठ	-	श्रेष्ठतरः	श्रेष्ठतरा	श्रेष्ठतरम्
निम्न	-	निम्नतरः	निम्नतरा	निम्नतरम्

तमप्				
पटु	-	पटुतमः	पटुतमा	पटुतमम्
समीप	-	समीपतमः	समीपतमा	समीपतमम्
लघु	-	लघुतमः	लघुतमा	लघुतमम्
गुरु	-	गुरुतमः	गुरुतमा	गुरुतमम्
कटु	-	कटुतमः	कटुतमा	कटुतमम्
दीर्घ	-	दीर्घतमः	दीर्घतमा	दीर्घतमम्
श्रेष्ठ	-	श्रेष्ठतमः	श्रेष्ठतमा	श्रेष्ठतमम्
निम्न	-	निम्नतमः	निम्नतमा	निम्नतमम्

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 6

धातु रूप

. लट्लकार

धातु	प्रथम पुरूष			मध्यम पुरूष			उत्तम पुरूष		
पठ् (पढ़ना)	पठति	पठतः	पठन्ति	पठसि	पठथः	पठथ	पठामि	पठावः	पठामः
गम् (जाना)	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
दृश् (देखना)	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
पा (पीना)	पिबति	पिबतः	पिबन्ति	पिबसि	पिबथः	पिबथ	पिबामि	पिबावः	पबामः
लिख् (लिखना)	लिखति	लिखतः	लिखन्ति	लिखसि	लिखथः	लिखथ	लिखामि	लिखावः	लिखामः
प्रच्छ् (पूँछना)	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः
वद् (बोलना)	वदति	वदतः	वदन्ति	वदसि	वदथः	वदथ	वदामि	वदावः	वदामः
भू (होना)	भवति	भवतः	भवन्ति	भवसि	भवथः	भवथ	भवामि	भवावः	भवामः
नश् (नष्ट होना)	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः
नी (ले जाना)	नयति	नयतः	नयन्ति	नयसि	न्यथः	नयथ	नयामि	नयावः	नयामः
इष् (चाहना)	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
कृष् (जोतना)	कृषति	कृषतः	कृषन्ति	कृषसि	कृषथः	कृषथ	कृषामि	कृषावः	कृषामः

अध्याय – 9

कारक

कारक
↓
कृ (धातु) + ण्वुल प्रत्यय

परिभाषा: –
क्रिया जनकत्वं कारकम् कारकत्वम्।
क्रिया करोति इति कारकम्।
वाक्यों में जिन जिन शब्दों का क्रिया के साथ सीधा संपर्क रहता है, उसे कारक कहते हैं।
उदाहरण – कक्षाया अध्यापकः शिवः।
दशरथस्य पुत्रः रामः।

कारक	विभक्ति	कारक चिन्ह
कर्ता	प्रथमा	ने
कर्म	द्वितिया	को
करण	तृतीय	से/द्वारा
संप्रदान	चतुर्थी	के लिए
अपादान	पंचमी	से (पृथक)
सम्बन्ध	षष्ठी	का, के, की, रा, रे, री
अधिकरण	सप्तमी	में/पर

नोट: संबंध को कारक नहीं माना गया है, संबंध में षष्ठी विभक्ति 'शेषार्थ' अर्थ में होती है।
उदाहरण – दशरथस्य पुत्रः रामाः।
कक्षाया अध्यापकः शिवः।

कारक चिह्न

विभक्ति	**कारक**	**चिह्न**
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

प्रथमा विभक्ति – कर्ता कारक

1. **प्रतिपादिकार्थ** – (निश्चित अर्थ होता है)
उदाहरण: कृष्णः (अपनी तरफ खींचने वाला)
रामाः (समाहित होने वाला)
श्री, ज्ञानम्, उच्चैः, नीचैः (अव्यय)
2. **लिंग** – तीन – तटः (किनारा) तटी तटम्
3. **परिमाण** – (नाप – तोल) – द्रोणों व्रीहीः
↓
वाल्टी भार चावल
4. **वचन** – (तीन) – एकः, द्वओ, बहतः
5. **संबोधन** – प्रथमा – हे राम!

द्वितीया विभक्ति – कर्म कारक

'कर्तुरिप्सितं कर्मः '
कर्मणि द्वितीया
उदा. – राम हरि को भजता है।
↓
कर्ता कर्म क्रिया

कर्ता क्रिया के माध्यम से जिसको सर्वाधिक चाहता है कर्म कहलाता है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नोटः जो अपने कार्य को करने में स्वतंत्र होता है, कर्ता कहलाता है। कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

रामः हरीं भजति।
सीता पुस्तक पढ़ती है।
सीता पुस्तकम् पठति।

'अधिशीङ्स्थाऽऽसां कर्मः'

अधि + शिङ् (सोना)
स्था (बैठना) + आधार
अस् (ठहरना)
हरि बैकुंठ में सोते हैं।
हरिः बैकुंठम् अधिशेते।
मोहनः ग्रामे अधितिष्ठति'

इत्यास्मिन वाक्य शुद्ध कुरु-

(1) ग्रामे
(2) ग्रामम
(3) ग्रामस्य
(4) ग्रामात

अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), समया/निकषा (समीप में), धिक (धिक्कार), प्रति - की ओर, उभयतः (दोनों ओर) आदि के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

ग्रामं अभितः नदी अस्ति।
उद्यान निकषा विद्यालयः अस्ति।
धिक् दुर्जनम।
मोहन आपण प्रति गच्छति।

'उपन्वध्याङ्वसः'

उप + अनु + अधि + आङ्
↓
वस धातु
↓
आधार - कर्म -

द्वितीया

उदा. -
मुनि पर्वत पर रहते हैं।
मुनिः पर्वत अनुवसति।
गुरुः गुरुकुले अधिवसति

शुद्ध कुरु -

(1) गुरुकुलम
(2) गुरुकुलात
(3) गुरुकुलस्य
(4) सर्वे

सेना कटकम् (छावनि) अवसति।

'अकथित च -'

अपादान आदि कारकों के द्वारा विशेषित कारक की कर्म संज्ञा होती है। यह द्विकर्मक सूत्र माना जाता है, इसमें 16 धातुओं का प्रयोग होता है।

मुख्य कर्म/प्रधान कर्म
↓
गौण कर्म/अप्रधान कर्म

उदा. - राम बलि से पृथ्वी मांगता है।
↓
कर्ता गौण कर्म प्रधान कर्म क्रिया
रामः वलिं वसुधाम् याचते।
रमा गाय से दुग्ध दूहती है।
रमा गां दोग्धि पयः
↓
कर्ता गौण कर्म धातु प्रधान कर्म

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp – https://wa.link/l6dgy4

Online order – https://bit.ly/bstc-notes

Call करें – 9887809083